CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th Nov. 2020, Revised on 25th Nov. 2020, Accepted 16th Dec. 2020

आलेख

शिक्षक शिक्षा में छात्र एवं शिक्षक संबंध

* डॉ0 अनुराधा कुमारी
प्राचार्या,
पटेल बी0 एड0 कॉलेज, लोधमा, खूँटी, झारखण्ड
Email-dranuradhakumari88@gmail.com, Mob.- 7488729197, 7858059472

मुख्य शब्द : नाट्य, नाट्यकर्म, नाट्यवेद, पंचमवेद, संप्रेषण, नाट्य-संप्रेषण, संकेत, संकेतन *आदि.*

सारांश

शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है। शिक्षक और छात्र का संबंध अटूट होता है। शिक्षक को गुरू भी कहते है। कहा गया है गुरू ब्रम्हा गुरू विष्णु गुरूः देवो महेश्वरा गुरू शाक्षात परब्रम्हा तस्मै श्री गुरूवे नमः । छात्र के निर्माण में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रास्ते से भटके हुए छात्र को रास्ता दिखाना गुरू का कर्तव्य होता है। प्राचीन काल से आज तक गुरू सर्वोपरि है। गुरू और शिष्य का संबंध माली और फूल के बीच का होता है। जिस प्रकार एक शिक्षक के लिए शिष्य है। उसी प्रकार माली भी फूलो की देखभाल वैसे ही करते है। शिक्षक ही शिक्षक बनाते है। बी0 एड0 के शिक्षक इस बात की ध्यान रखते है कि शिक्षक – शिक्षक का संबंध होता है। शिक्षक और छात्र के बीच अत्यंत ही पवित्र संबंध होता है। गुरू और शिष्य की परंपरा अति प्राचीन और बेहद पवित्र भी है। यह संबंध समय के साथ मजबूत और शिष्य दोनों एक दूसरे का सम्मान करें।

शिक्षक स्वंय मार्ग में चल रहे हो तो उस मार्ग में आने वाली बाधाओं से छात्रों को अवगत कराए। अपनं छात्रों को उन कठिनाईयों से परिचित कराए। साथ ही उसका समाधान भी बताए। किसी भी स्तर के छात्र के लिए आवश्यक है कि वह अपने शिक्षकों का सम्मान करे। अधिकांश छात्र अपने शिक्षको को अपना आर्दश मानते है। शिक्षक वह है जो अपने छात्रों को स्वरूप प्रदान करता है। शिक्षक शब्द अपमान के बदले सम्मान की भावना को प्रकट करता है। प्राचीन काल में गुरू–शिष्य के अनेक उदाहरण देखने को मिलते है। दोनों की महत्ता अलग–अलग थी। गुरू भी शिष्य के प्रति जान न्योछावर करते थे और शिष्य भी गुरू की सेवा त्याग की भावना से करते थें। प्राचीन, मध्यकालिन, आधुनिक और वर्तमान में अभी भी गुरू शिष्य एवं पवित्र रिश्ता के रूप में देखा जाता है।

शिक्षक शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बना है –शि, क्ष और क। शि का अर्थ होता है शिखर तक ले जाने वाला, क्ष का अर्थ होता है क्षमा करने की भावना रखने वाला और क का अर्थ होता है कमजोरी दून करने वाला। अर्थात शिक्षक वह है जो छात्र की कमजोरी को दूर करके उसे शिखर तक पहुँचाता है अर्थात उसे उसके लक्ष्य तक पहुँचाता है। शिक्षक को गुरू भी कहते है, जो अपने शिष्य को अंधकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाते है ।

गुरू के संबंध में किसी ने कहा भी है –

गुरू ब्रम्हा गुरू विष्णु

गुरूः देवो महेश्वरा

गुरू शाक्षात परब्रम्हा

तस्मै श्री गुरूवे नमः

अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि गुरू ही ब्रहमा है, गुरू ही शिव है और गुरू ही विष्णु है। इन तीन देवों के बारे में जो हम जानते है कि सृष्टि निर्माण में इनका क्या योगदान है? इन तीनों का उत्तरदायित्व गुरू अकेले निर्वाह कर लेते है। इसलिए गुरू के सम्बन्ध में कबीरदास जी ने कहा है–

गुरू गोविन्द दोउ खड़े

काकै लागो पाय

बलिहारी गुरू आपनौ,

गोविन्द दियो बताय ।।

अर्थात गुरू और गोविन्द नाम का मतलब भगवान, दोनों अगर एक साथ हमारे सामने खड़े हो, तो हमें पहले गुरू का पैर छूना चाहिए, क्योंकि गुरू ही वह माध्यम है जिन्होंनेगोविन्द से हमारा साक्षात्कार कराया है। इसलिए पहले गुरू है।

लेकिन हमें थोड़ा सावधान होने की भी जरूरत है, क्योंकि गुरू के अंदर गुरूत्व का गुण होना बेहद आवश्यक है। ऐसा इसलिए क्योंकि गुरू में ज्ञान, सत्चरित्र, कुशल व्यक्तित्व इत्यादि चीजों का होना अति आवश्यक है। यदि गुरू में ज्ञान नहीं है तो एक तरह से पत्थर का नाव है। पत्थर का नाव खुद तो डुबता ही है साथ ही अपने पर सवार लोगो को भी डुबा देता है। अतः गुरू का ज्ञानी होना बेहद आवश्यक है।

छात्रों को बनाने में गुरू का स्थान

छात्रों के भविष्य के निर्माण में गुरू का महत्वपूर्ण स्थान होता है। गुरू कभी प्यार से तो, कभी थोड़ी डाँट से छात्रों के भविष्य को बनाने की कोशिश करते है। यही कारण है कि गुरू की तुलना कुम्हार से और शिष्य की तुलना घड़े से गयी है –

गुरू कुम्हार शिष्य कुंभ

गाढ़ि, गाढ़ि काढ़े खोट।

भीतर हाथ सम्हारि दे,

दे बाहर – बाहर चोट।।

अर्थात जिस प्रकार एक कुम्हार अपने घड़े की आकृति बनाते समय उसे धीरे–धीरे बाहर से चोट देता है, लेकिन वह कहीं टूट न जाये इस कारण उसे अंदर हाथ रखकर सम्भालता भी है। ठीक उसी प्रकार गुरू भी अपने शिष्य के जीवन को सफल बनाने के लिए उन पर थोड़ा सख्ती दिखाते है, लेकिन वह हतोत्साहित न हो इसके लिए उसका समय–समय पर उत्साह भी बढ़ाते है।

छात्रों को कभी भी अपने गुरू की डाँट का बुरा नहीं मानना चाहिए क्योंकि पत्थर को सुन्दर आकृति में बदलने के लिए उसे तरासना पड़ता है। इसके लिए पत्थर पर छेनी और हथौड़े चलाने पड़ते हैं अगर पत्थर इसका बुरा मानने लगा तो वह कभी सुन्दर आकृति में नहीं बदल पायेगा। इसलिए छात्रों को भी टिचर की डाँट का बुरा नहीं मानकर,उनके द्वारा दिये गये सीख को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

छात्रों के जीवन में गुरू का क्या महत्व होता है? यह इसी बात से पता चलता है कि प्राचीन काल से आज तक कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं मिला है जिसके सफल होने में किसी न किसी गुरू का हाथ न हो। एक मात्र ऐसा शिष्य एक लव्य ही था जिसने बिना गुरू के ज्ञान प्राप्त कर लिया । लेकिन फिर भी उसने ज्ञान प्राप्त करने से पहले उसने अपने गुरू द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकरा उससे आज्ञा प्राप्त कर लिया था। छात्रों के विकास में गुरू जो योगदान देते है उसके संबंध में मैं यही कहना चाहूँगी कि –

सात समन्दर की मसि करौ,

लेखनि सब बनराई,

सब धरती कागद करौ,

गुरू गुण लिखा न जाई।।

कहने का तात्पर्य यह है कि अगर सात समुद्र को सियाही बना लिया जाय, धरती पर जितने पड़े–पौधे है उनको लेखनी बना लिया जाय और पूरी धरती को कागज बना लिया जाय तो भी गुरू के गुणों को नहीं लिखा जा सकता है क्योंकि वह अनन्त है। इसलिए छात्र का भविष्य बनाने में गुरू का महत्वपूर्ण स्थान होता है उस गुरू का ज्ञानी और चरित्रवान होना बेहद आवश्यक है।

जिस प्रकार गुरू का छात्र के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है, ठीक उसी प्रकार छात्र का भी गुरू के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। अब हम आगे बात गुरू और छात्र के बीच के संबंध के बारे में करेंगे।

गुरू–छात्र संबंध

गुरू और शिष्य के बीच वही संबंध होता है, जो माली और फूल के बीच होता है। जिस प्रकार एक माली फूल को सिंचता है, तो वह फलता–फूलता है, ठीक उसी प्रकार अगर शिक्षक भी अपने सभी छात्रों को बिना भेद–भाव उसका ध्यान रखता है तो सभी छात्र शिक्षक से प्यार करते है और उनका विकास भी होता है। लेकिन अगर माली अपने फूलों पर सही से ध्यान नहीं देता है तो फूल मुर्झा जाता है। ठीक इसी तरह शिक्षक भी अगर अपने छात्रों में भेदभाव करते है, किसी को अधिक प्यार करते है और किसी पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते है, तो वह छात्र प्रभिावान होते हुए भी मुर्झा जाता है। इसलिए शिक्षक के लिए यह बेहद आवश्यक है कि वह अपने सभी शिष्यों को एक समान लाड़–प्यार(ध्यान) दे। वे बच्चें जो शिक्षक से दूर – दूर रहते है, हमेशा शांत रहते है उन पर शिक्षक को विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि वो बच्चें भी निखर कर बाहर आ सके। जिस प्रकार छात्र शिक्षक के महत्व को समझते है, उसी प्रकार एक शिक्षक को भी यह बेहद जरूरी है कि वह छात्र के महत्व को समझे। छात्र शिक्षक का ही परछाई होता है। सम्पूर्ण जीवन में छात्रों के व्यवहार में गुरू की छाप होती है। इसलिए गुरू भी यह समझे कि उनका छात्र देश का भविष्य है इसलिए वह छात्रों का भी सम्मान करे। उनके अंदर आत्मसम्मान की भावना को जगाए । क्योंकि सफल वही गुरू माना जाता है जिनके शिष्य सफल होते है। अतः शिक्षक के लिए यह बेहद आवश्यक है कि वह छात्रों का भी ध्यान रखे।

शिक्षक शिक्षा में छात्र एवं शिक्षक संबंध

शिक्षक ही एक शिक्षक बनाते है। मेरे कहने का अर्थ बी0एड0 के छात्रों से है। बी0 एड0 के छात्र देश के भावी शिक्षक है और उन्हें भी शिक्षक ,एक शिक्षक ही बनाते है। वहा पर शिक्षक – छात्र का संबंध बड़ा खूबसूरत होता है। क्योंकि वहाँ एक शिक्षक मौजूद है और छात्र भी शिक्षक बनने की कगार पर है। ऐसी स्थिति में शिक्षक को अपना स्थान भी बनाए रखना है और छात्रों को शिक्षक बनने के लिए भी तैयार करना है। ये वह पड़ाव है जहाँ छात्रों को उपदेश की नहीं उदाहरण की ज्यादा आवश्यकता होती है। अब आप सोच रहे होंगे कि उपदेश और उदाहरण में क्या अंतर होता है। अगर कोई अपना कर्म नहीं करता है, सिर्फ दूसरों को सीख देता है तो उपदेश कहलाता है और अगर कोई बोलता नहीं बल्कि करके दिखलाता है। इसका मतलब वह स्वयं करके दिखलाता है कि क्या करना चाहिए तो उसे उदाहरण कहते है। इसलिए बी0 एड0 के शिक्षकों के लिए यह बेहद आवश्यक है कि वह अपने छात्रों को कैसा शिक्षक बनते देखना चाहते है? इसके लिए छात्रों उपदेश देने के स्थान पर उन्हें आप एक अच्छा शिक्षक बनकर दिखाईये। उनके समक्ष एक अच्छे शिक्षक की भूमिका प्रस्तुत करये। जिसे देखकर वो छात्र ज्यादा सिखेंगे।

बी0 एड0 कर रहे छात्र के लिए भी यह बेहद आवश्यक है कि वे यह न समझे कि वे तो शिक्षक बनने जा रहे है तो स्वयं को एक अच्छे शिक्षक के लिए अपने को तैयार कर लेंगे। बल्कि वे यह सोचे कि अब वह बच्चों का मार्गदर्शन करने के लिए जाऐंगे। अतः उनको खुद मार्ग का ज्ञान होना बेहद आवश्यक है क्योंकि बिना मार्ग देखे आप किसी को भी मार्ग नहीं दिखला सकते है। इसलिए यह बेहद आवश्यक है कि छात्र अपने शिक्षक की बातों पर ध्यान दे। उनकी सीख को अपने जीवन में धारण करे।किसी भी स्तर के छात्र के लिए यह बेहद आवश्यक है कि वह अपने शिक्षक का सम्मान करे। लेकिन बी0 एड0 के छात्रों के लिए तो यह अति आवश्यकत है, क्योंकि अगर आप अपने शिक्षकों का सम्मान करेंगे तो आपके छात्र भी आपका सम्मान करेंगे।

बी0 एड0 के शिक्षक इस बात का ध्यान रखे कि उनके बीच शिक्षक और छात्र का संबंध भी है और शिक्षक – शिक्षक का भी संबंध है। इसलिए वह शिक्षक जीवन की सभी अनिवार्य चीजो से छात्रों को अवगत कराये। शिक्षक स्वयं उस मार्ग में चल रहे तो उस मार्ग में आगे आने वाली सभी कठिनाईयों से वह अवश्य परिचित होंगे। तो आप अपने छात्रों को भी उन कठिनाईयों से परिचित कराए। साथ ही उनका सामाधान भी बताए। छात्र जिस प्रकार शिक्षक के मान– सम्मान का हमेशा ध्यान रखते है, ठीक उसी प्रकार यह भी बेहद आवश्यक है, कि शिक्षक भी अपने छात्र का मान–सम्मान का पूरा ध्यान रखे। क्योंकि वह अब एक शिक्षक बनने जा रहे है तो अगर उसका सम्मान करेंगे तभी उसके अंदर आत्मसम्मान की भावना जागेगी।

यह मानी हुई बात है कि जिस इंसान में आत्मसम्मान होता है, वही दूसरो का सम्मान करता है जिसका खुद सम्मान नहीं है वह दूसरो का सम्मान कभी कर भी नहीं सकता है। इसलिए बी0 एड0 के शिक्षको के लिए यह बेहद आवश्यक है कि वह अपने छात्रों में आत्मसम्मान की भावना हो जगाए। जिससे वह जब एक शिक्षक बने तो अपने छात्रों को भी सम्मान दे तथा उनकी भावना का ध्यान रखे।

शिक्षक – छात्र संबंध की समस्या

शिक्षक और छात्र के बीच का संबंध अत्यंत ही पवित्र होता है। एक – दूसरे के लिए दोनों ही अति महत्वपूर्ण होते है और दोनों एक दूसरे के अत्यंत ही करीब भी होते है। परन्तु फिर भी दोनो में कितना भी गहरा संबंध क्यों न हो पर उनके एक झिझक होती है कि छात्र खुलकर अपनी बात शिक्षक को बता नहीं पाते है। कई बार छात्र अपने मन की कहना चाहता है लेकिन वह बोल नहीं पाता है। उसके अंदर से झिझक दूर करना भी एक शिक्षक का ही फर्ज है। अतः शिक्षक को कुछ ऐसी योजना अपनानी चाहिए जिससे छात्र बिना किसी रूकावट के अपनी बातों को शिक्षक को बता सके।

शिक्षक अपने छात्र से जुड़ने के लिए एक योजना बना सकता है। जिसमें वे सभी बच्चों को एक कागज दे और उनको बिना नाम और क्रमांक लिखे अपनी समस्या को लिख कर शिकायत पेटी में जमा करे। इस माध्यम से शिक्षक को केवल छात्रों की समस्या को जानना ही आवश्यक नहीं है, बल्कि वह पूरी ईमानदारी से उनकी समस्या का समाधान करे। इससे शिक्षक – छात्र के बीच के संबंध में सुधार होगा और सुदृढ़ होगा।

गुरू और शिष्य की परंपरा अति प्राचीन और बेहद पवित्र भी है। यह संबंध समय के साथ मजबूत और सुंदर हो इसके लिए यह आवश्यक है कि गुरू और शिष्य दोनों एक–दूसरे का सम्मान करें।

उस काल में गुरू–शिष्य का सम्बन्ध बहुत महत्त्वपूर्ण हुआ करता था। शिक्षा प्रदान करने वाले गुरू को भगवान तुल्य माना जाता था। अपने शिष्यों के प्रति गुरू का व्यवहार भी पिता तुल्य हुआ करता था। गुरू अपनी सन्तान की भाँति शिष्यों के भविष्य के प्रति चिंतित रहते थें और उन्हें शिक्षित करने के लिए प्रयत्न किया करते थे । एक पिता के समान गुरू गलती करने पर शिष्यों को सख्त सजा भी दिया करते थे, ताकि अपनी गलती का अनुभव करके शिष्य उसे दोहराने का प्रयत्न न कर सकें। उस काल में शिष्य भी गुरू द्वारा दी गयी सजा को सहर्ष स्वीकार कर लिया करते थे। उन्हें अपने गुरू पर पूर्ण विश्वास होता था।

परन्तु गुरूकुल परम्परा समाप्त होने के साथ ही गुरू– शिष्य के सम्बन्धों में गिरावट आने लगी। आश्रमों के स्थान पर विद्यालय, महाविद्यालय बनने लगे। छात्रों के लिए शिक्षा ग्रहण करना पूर्ववत् जीवन की आवश्यकता बना रहा। परन्तु शिक्षकों के लिए विद्यालय में जाना मात्र नौकरी रह गया।

अब शिक्षक – छात्र के सम्बन्ध व्यावसायिक हो गए । शिक्षक मानने लगे कि छात्रों को पढ़ाना उनकी विवशता है, क्योंकि इसी कार्य के लिए उन्हें वेतन मिलता है। शिक्षा प्रदान करना वास्तव में उनकी रोजी – रोटी है। दूसरी ओर छात्रों के मन – मस्तिष्क में भी यह बात बैठ गयी कि शिक्षा प्रदान करके शिक्षक उन पर कोई उपकार नहीं करते।

एक पारंपरिक भारतीय व्यवस्था में गुरू–शिष्य का रिश्ता एक बहुत ही पवित्र रिश्ता माना जाता था, जहाँ गुरू या शिक्षक अपने छात्रों में, आध्यात्मिक, वैदिक, नैतिक और अकादमिक शिक्षाओं को संचारित करते थे। गुरू शब्द का अर्थ एक अंधेरे में फंसे हुए व्यक्ति को ज्योतिमान करना (गु का अर्थ है, अंधकार और रू का अर्थ है प्रकाश) है। संपूर्ण उस समय शिक्षा का उद्देश्य उच्च नैतिक महत्व से संतुलित व्यक्तित्व में तथा अज्ञानता को एक ज्ञानता में बदलना होता था। इसके बदले में छात्र अपने गुरूओं के घर के कार्यों में सहायता करते थे और जो समर्थ होता था वह गुरू दक्षिणा के रूप में धन का भुगतान करता था। यह पारस्परिक संबंध शिक्षक के ज्ञान और छात्र की आज्ञाकारिता पर आधारित था। ऐसे गुरू–शिष्य संबंध में, एक सक्षम गुरू के कंधो पर सब कुछ छोड़ दिया जाता था। जो एक निर्माता के रूप में अभिनय करके, अपने शिष्यों या छात्रों को एक नई आकृति प्रदान करता था।

सन्दर्भ–ग्रंथ

- कबीर ग्रंथ
- विनय पत्रिका – तुलसीदास
- रामायण – वाल्मिकि
- शिक्षा का इतिहास – हरिश पचौरी

**** Corresponding Author***

डॉ0 अनुराधा कुमारी

प्राचार्या,

पटेल बी0 एड0 कॉलेज, लोधमा, खूँटी, झारखण्ड

Email-dranuradhakumari88@gmail.com, Mob.- 7488729197, 7858059472